प्रकाशन तिथि : 01 जून, 2022
प्रेषण तिथि : 04 जून, 2022

पाक्षिक

'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2021-23
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

वर्ष 26 | अंक 06 | कुल पृष्ठः 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

'युवकों एवं युवतियों के उच्च प्रशिक्षण शिविर संपन्न'

(कोविड महामारी के प्रकोप के कारण तीन वर्ष बाद विगत 19 से 29 मई 2022 तक बाड़मेर स्थित आलोक आश्रम में संघ का उ.प्र.शि. संपन्न हुआ। शिविर में राजस्थान, गुजरात, हरियाणा, उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश व महाराष्ट्र से 540 शिविरार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। इसी अवधि में चौहटन स्थित विरात्रा मंदिर ट्रस्ट की धर्मशाला में युवतियों का उ.प्र.शि. सम्पन्न हुआ जिसमें 177 बालिकाओं ने प्रशिक्षण लिया।)

'जागृत रहकर सुअवसर का उपयोग करें'

(स्वागत उद्बोधन का सार संक्षेप)

पिछले लगभग 2 से 3 वर्ष बाद इस तरह का एक बड़ा शिविर हम आयोजित कर रहे हैं और किसी भी साधना में यदि कोई व्यवधान आ जाता है तो हम सभी लोग जानते हैं कि उससे नैराश्य भाव आ जाता है, निराशा आ जाती है। शिविर में हम सब चार्ज होने के लिए आते हैं लेकिन शिविर न लगने से हम चार्ज नहीं हो पाए। यह अलग बात है कि बीच में हमने श्री क्षत्रिय युवक संघ के 75 वर्ष पूर्ण होने पर हीरक जयंती समारोह का आयोजन किया और वह एक भव्य समारोह हुआ लेकिन उस आयोजन के पीछे जो साधना थी, उस आयोजन की सफलता के पीछे जो तपस्या थी उस तपस्या को हम इस प्रकार के शिविरों में आकर अर्जित करते हैं और अपने में ऊर्जा भरते हैं। **(शेष पृष्ठ 2 पर)**

'धुएं में सत्य को ओझल न होने दें'

(भाल पर तिलक लगाकर दी विदाई)

आज से 11 दिन पूर्व आलोक आश्रम की इस पुण्यभूमि पर एक बस्ती बसाने का प्रयास किया गया। जहां बसावट होती है, वहां स्वतः खुशहाली आ जाती है। हमारे यहां 11 दिन तक बसने से इस आश्रम में, हमारे मनों में, हमारे दिलों में भी एक खुशहाली आई। आपके गीत, आपका नृत्य, आपके प्रकट किए उद्गार - सब उस खुशहाली के प्रमाण है।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

'समाज और राष्ट्र के निर्माण में सर्वप्रमुख दायित्व नारी शक्ति का'

श्री क्षत्रिय युवक संघ का बालिकाओं का ग्यारह दिवसीय प्रशिक्षण शिविर 19 से 29 मई तक चौहटन के विरात्रा स्थित वाकल धाम तीर्थ स्थल पर सम्पन्न हुआ। वरिष्ठ स्वयंसेविका जागृति बा हरदासकाबास द्वारा वरिष्ठ स्वयंसेवक जोरावर सिंह भादला के मार्गदर्शन में शिविर का संचालन किया। उन्होंने तिलक लगाकर बालिकाओं का स्वागत करते हुए कहा कि किसी भी समाज और राष्ट्र के निर्माण का सर्वप्रमुख दायित्व नारी शक्ति का ही होता है। माता के रूप में हम नारियां समाज और राष्ट्र की भावी पीढ़ी को जिस प्रकार का शिक्षण देंगी उसी से हमारे समाज और राष्ट्र का भविष्य तय होगा। श्री क्षत्रिय युवक संघ अपने इन शिविरों के माध्यम से हमें उस गुरुत्तर दायित्व के निर्वहन के लिए प्रशिक्षित कर रहा है। पूज्य तनसिंह जी ने संघ की स्थापना समाज को स्वधर्मपालन के मार्ग पर प्रवृत्त करने के लिए की थी।

(शेष पृष्ठ 2 पर)

'समाज और राष्ट्र के निर्माण में सर्वप्रमुख दायित्व नारी शक्ति का'

(पेज एक से लगातार)

क्षात्रधर्म हमारा स्वधर्म है, इसी के पालन के लिए हमारी माताओं ने जौहर जैसी परंपराएं निर्मित करके संसार को यश-अपयश का पाठ पढ़ाया। अपने पति को कर्तव्य मार्ग पर प्रवृत्त करने के लिए अपना शीश काटकर भेंट करने वाली हाडी रानी जैसे आदर्श केवल हमारे ही समाज में मिलते हैं। कर्तव्य के लिए बलिदान होने की परंपराओं की निमार्ता कौम में हमें जन्म मिला है यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है। यश, गौरव और सम्मान की जो थाती हमारी माताओं ने अग्नि में जल कर सहेजी थी, उसके खोने का खतरा सामने खड़ा है। उसे सहेज कर अगली पीढ़ी को प्रदान करने का कार्य केवल श्री क्षत्रिय युवक संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली से ही संभव है इसलिए इस शिविर में ग्यारह दिनों तक बताई जाने वाली बातों को अपने हृदय में धारण करके जीवन में उतारने का अभ्यास करें। शिविर में राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, महाराष्ट्र राज्यों से 170 बालिकाओं ने खेल, सहगायन, चर्चा आदि विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से श्री क्षत्रिय युवक संघ का उच्चतर स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

23 मई को माननीय संरक्षक महोदय भगवान सिंह जी रोलसाहबसर भी शिविर में पहुंचे तथा शिविरार्थी बालिकाओं से भेंट की। बालिकाओं से परिचय करते हुए

भारत-पाक सीमा भ्रमण

अनौपचारिक बातचीत में संरक्षक श्री ने कहा कि आप में से कई बालिकाओं के परिवार में पहले से संघ का वातावरण रहा है तो कई बालिकाओं के परिवार के लिए संघ नया है। आपके परिवार में आपके माध्यम से ही संघ पहुंचेगा इसलिए आपका आचरण संघ के अनुकूल होना आवश्यक है नहीं तो संघ के प्रति गलत धारणा भी आपके परिवार में आ सकती है। ऐसा न हो, यह आपका दायित्व है। यहां जो कुछ बताया जा रहा है उसकी गहराई में जाकर उसे समझें और जीवन में उतारें इसी में इन ग्यारह दिनों के प्रशिक्षण की सार्थकता है। पत्रकार के साथ बातचीत करते हुए संरक्षक श्री ने कहा कि आज की बालिकाएं ही कल की माताएं बनेंगी और माता ही संतान की निमार्ता होती है। लेकिन यदि माता स्वयं संस्कारित नहीं होगी तो संतान को संस्कार कैसे दे सकेगी, इसीलिए बालिकाओं में भी संस्कारनिर्माण का कार्य होना आवश्यक है। इसी दृष्टिकोण से श्री क्षत्रिय युवक संघ बालिकाओं के इस प्रकार के प्रशिक्षण शिविर आयोजित करता है। यहां का वातावरण आनंदमय है लेकिन जब तक जीवन में परिवर्तन नहीं आता तब तक यह आनंद सार्थक नहीं है। हमारा जीवन श्रेष्ठता की ओर बढ़े, हमारे पूर्वजों में जो क्षत्रियत्व के गुण थे वे हममें भी आएं इसीलिए यह सारा प्रशिक्षण दिया जा रहा है। माननीय संघप्रमुख श्री ने साथियों सहित वाकल माता मंदिर तथा वैर माता के थान पहुंचकर दर्शन भी किए।

29 मई को बालिकाओं को विदाई देते हुए शिविर संचालिका श्रीमती जागृति बा हरदासकाबास ने कहा कि आज से 10 दिन पूर्व आपके भाल पर तिलक लगाकर जिस प्रकार स्वागत किया गया था, उसी प्रकार आज पुनः तिलक लगाकर आपको विदाई दी जा रही है। यह केवल रस्मी विदाई है वास्तविक विदाई नहीं है क्योंकि आप यहां आकर संघ से जुड़ गई हैं और संघ की स्वयंसेविका बन गई हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ एक ईश्वरीय कार्य

है और हमने भी इस शिविर में इस बात को अनुभव किया है। इस एकांत स्थल पर प्रकृति की गोद में इस ईश्वरीय कार्य में ईश्वर की इतनी कृपा रही कि ऐसी भीषण गर्मी में भी हम पर शीतलता बरसती रही और हमें गर्मी का एहसास ही नहीं हुआ। जो ईश्वरीय कार्य करता है उसकी ईश्वर सहायता करता है। लेकिन यह कार्य आसान नहीं है, बहुत कठिन कार्य है। एक परीक्षार्थी जब परीक्षा देने जाता है तो उसके मन में अनेक विचार आते हैं उसी प्रकार आपके मन में भी अनेक प्रकार के विचार आए होंगे कि शिविर कैसा होगा, श्री क्षत्रिय युवक संघ क्या है लेकिन यहां के आनंद में वो सारे प्रश्न खो गए। इन 10 दिनों में आपने बहुत कुछ सहन किया, अनेक परीक्षाओं को उत्तीर्ण किया। प्रातः 4 बजे उठकर जागरण गीत से लेकर रात्रि दस बजे तक लगातार कार्यक्रमों में व्यस्त रखते हुए आपको डांटा भी गया, फटकारा भी गया पर आपने वे सभी दायित्व इस प्रकार निभाए जैसे आपको कोई कष्ट ही नहीं हो रहा। आपके शिविर अनुभव जो आपने सुनाए, उससे श्री क्षत्रिय युवक संघ से आपको मिली हुई प्रेरणा प्रकट हो रही थी। आपकी आंखों के आंसू यहां पनपे स्नेह का जीवंत प्रमाण दे रहे थे। अब श्री क्षत्रिय युवक संघ से मिले ज्ञान को आप अपने जीवन में उतारें। आपके हृदय में एक दीपक को प्रज्वलित किया गया है, उसमें घी रूपी संस्कार भी संघ ने दिए हैं उनका निरंतर अभ्यास कर-के उसकी पूर्ति करती रहें। उस ज्योत को बुझने न दें जो ज्योत श्री क्षत्रिय युवक संघ ने यहां आपके हृदय जगाई हैं। जो सुगंध आपके जीवन में क्षत्रिय युवक संघ ने इन दस दिनों में दी हैं उसे अपने तक सीमित मत रखना।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

जागृत रहकर...

वह ऊर्जा पिछले दो वर्ष से हमारे अंदर नहीं आई इसलिए श्री क्षत्रिय युवक संघ का काम और आगे बढ़ाने के लिए, उस साधना को आगे बढ़ाने के लिए फिर से उस ऊर्जा को एकत्रित करना आवश्यक था। भगवत कृपा से हमको इस प्रकार का अवसर मिला और जो लोग यहां बैठे हैं ऐसे लोगों पर भगवत कृपा हुई जिससे ऐसा अवसर हमको मिला है। मानव जीवन मिलना सौभाग्य है लेकिन उससे आगे क्षत्रिय के घर में जन्म मिलना और फिर श्री क्षत्रिय युवक संघ जैसी संस्था, जो हमको हमारे सनातन उद्देश्य तक पहुंचाने का काम करती है, से हमारा जुड़ना भगवत कृपा से ही सम्भव हुआ है। इस शिविर में एक साधना करने के लिए आए हैं और प्रत्येक व्यक्ति को यह मानकर चलना होगा कि मैं यहां साधना करने ही आया हूं। चाहे वह शिक्षक है, चाहे वह घटनायक है, चाहे वह उपघटनायक है, चाहे पथक शिक्षक है और चाहे कोई स्वयंसेवक है। इसलिए इन ग्यारह दिनों में हमको प्रत्येक दिन, प्रतिक्षण यह ध्यान रखना होगा कि हमारा कोई समय व्यर्थ ना जाए। जो कुछ भी यहां बताया जाए, जो कुछ भी यहां कराया जाए, उसमें यदि पूर्ण रूप से हम अपने आप को सम्मिलित करेंगे तभी यहां से हम कुछ प्राप्त करके जाएंगे, अन्यथा 11 दिन के बाद हो सकता है हमारी झोली खाली ही रह जाए। मुझे कथा याद आती हैं कि एक भिखारी था जो भीख मांगने के लिए प्रातः अपने घर से निकला था। उसने अपनी झोली में पहले से ही धान के कुछ दाने डाल लिए थे जिससे अगले व्यक्ति को लगे कि पहले व्यक्ति ने भी कुछ दिया है। दूसरी ओर से जो उस राज्य का राजा था वह भी निकला क्योंकि उसे राज्य पर आए संकट को टालने के लिए ज्योतिषी ने बताया था कि आप भिक्षाटन के लिए निकले और जो पहला व्यक्ति मिले उससे भिक्षा प्राप्त करें, उसी से यह संकट दूर होगा। राजा की पहली भेंट उसी भिखारी से हो जाती है और वह उससे मांगता है कि उसे कुछ दान दे। लेकिन भिखारी को देने का अभ्यास नहीं था इसलिए वह साहस नहीं कर पा रहा था परंतु कोई चारा न पाकर उसने बड़े अनमने भाव से अपनी झोली में से चार दाने निकाल कर राजा को दे दिए। राजा उसे लेकर वापस लौट गया। उधर भिखारी पूरे दिन भीख मांग कर वापिस घर लौटा। उस दिन उसे इतनी भीख मिली जितने आज तक उसे नहीं मिली थी लेकिन उसे उन चार दानों का दुख अधिक था जो उसे देने पड़े थे। घर में जब उसने अपनी झोली खाली की तो देखा कि उस अनाज में चार दाने स्वर्ण के हो गए थे तब वह उस रहस्य को समझा और उसने अपना माथा पीट लिया कि मैंने अपना सारा धान राजा को क्यों नहीं दे दिया। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी हमसे मांगता है कि हमारे पास जो कुछ है चाहे वह अच्छा है या बुरा है, संघ को सौंप दें। हम इस शिविर में आए हैं और इस शिविर में आकर देने का जो भाव है उसको जागृत करें। जितना ज्यादा हम देंगे उतने ही दाने हमारे सोने के हो जाएंगे और यदि देने में हमने कंजूसी बरती तो ग्यारह दिन के बाद उसी भिखारी की तरह हमको भी सिर पीटना पड़ेगा। हम भी कहीं उस अंधे व्यक्ति की तरह ना हो जाए जिसको एक कमरे में बंद कर दिया गया जिसमें एक ही दरवाजा था और उसको बता दिया गया कि यहां पर एक दरवाजा है जिसको खोलकर वह बाहर निकल सकता है। वह व्यक्ति दरवाजे के लिए दीवार पर हाथ फिराते हुए घूमता रहा और जैसे ही दरवाजा आया उसके सिर में खुजली आई और वह खुजली करते हुए आगे बढ़ गया। ऐसा उसने तीन बार किया और उसने यह मान लिया कि इस कमरे में कोई दरवाजा नहीं है जबकि दरवाजा था। लेकिन जब अवसर आया तब वह खुजली करने में लग गया। हम भी ध्यान रखें कि उस अंधे की भांति इस ग्यारह दिन के अवसर को हम नहीं खोए। यहां हम हमारे क्षत्रियत्व को जगाएं, हम उस साधना को यहां पर पूर्ण करें जो साधना हमको बताई जाती है। साधना करवाने के लिए यहां किसी प्रकार का कोई जाप नहीं करवाया जाएगा, कोई तपस्या नहीं करवाई जाएगी। यहां की साधना यही है कि हमको जिस घट में रख दिया गया उसमें हम रहें, जिस पथक में हमको रख दिया है उस पथक में हम रहें, जैसा शिक्षक हमको कहते हैं वैसा ही हम ग्यारह दिन तक के लिए करें तो हमारी यह साधना पूर्ण हो जाएगी और यही साधना उच्चतर साधना में बदल जाएगी। हम हमारे उत्तरदायित्व को वहन करें, जो भी उत्तरदायित्व हमें मिला है। हमको एक घट के स्वयंसेवक के रूप में दायित्व मिला है तो उसे पूर्ण करें, घटनायक के रूप में दायित्व मिला है तो उसे पूर्ण रूप से वहन करें और इस शिविर को हम अपना मानें, यह मानें कि यह शिविर मेरे लिए ही लगा है तो इन ग्यारह दिन के बाद जो कुछ प्राप्त होगा वह आप स्वयं अनुभव करेंगे। इसलिए इस काम को दूसरा न मानें। श्री क्षत्रिय युवक संघ कहता है कि इन ग्यारह दिन तक हमको अनेकों प्रकार से शिक्षण मिलेगा, उस शिक्षण को हम ग्रहण करें, उस शिक्षण को हम गंभीरतापूर्वक देखें, पढ़ें, सुनें तो हमको सब कुछ प्राप्त हो जाएगा।

'प्रभात संदेशों के रूप में मिला संरक्षक श्री का मार्गदर्शन'

प्रभात संदेश का सार संक्षेप

शिविर में प्रतिदिन प्रातः कालीन वंदना के समय माननीय संरक्षक महोदय द्वारा प्रभात संदेश दिया गया। प्रतिदिन के प्रभात संदेश का सार संक्षेप निम्नानुसार हैः-

20 मईः 19 मई से 29 मई तक 11 दिन तक होने वाले इस यज्ञ में हम सभी आहुति देने आए हैं। कुछ बातें यहां बताई जाएंगी जैसे हमारा उद्देश्य क्या है, हमारा मार्ग क्या है, हमारा समाज किस प्रकार की स्थिति में है, हमारा इतिहास कैसा है, हमारा ध्वज, हमारी संस्कृति क्या है, अनुशासन क्या है, उत्तरदायित्व क्या है, यह सब बातें संक्षेप में आपको बताई जाएगी। मैं आप सब का आह्वान करता हूं कि मेरे साथ चलिए। चलते रहेंगे तो हमारा कल्याण निश्चित है यह मेरा निजी अनुभव है। मेरा यह निजी अनुभव आपका अनुभव बन जाए, यह तब संभव होगा जब भगवान की बात को हम समझ पाएंगे। सब कर्ताधर्ता तो भगवान है। पूज्य श्री तनसिंह जी द्वारा प्रदत्त हमारी साधना प्रणाली में अष्टांग योग के सभी अंग - यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि सूक्ष्म रूप में निहित है। यहां की छोटी-छोटी बातों में योग के महान सिद्धांत निहित है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के मार्ग पर जो निष्ठापूर्वक चलता है वह अपने परम लक्ष्य को सहजता से प्राप्त कर लेता है।

21 मईः श्रीमद्भगवद्गीता के 18वें अध्याय में भगवान श्री कृष्ण द्वारा कर्म के होने के लिए पांच कारण बताए गए हैं। हम काम करें वो हो ही जाए यह आवश्यक नहीं है। इसके लिए जिन कारणों का होना आवश्यक है उनमें प्रथम कारण है - अधिष्ठान अर्थात क्षेत्र। श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक के लिए समाज ही अधिष्ठान अर्थात कार्यक्षेत्र है। दूसरा है कर्त्ता और तीसरा है करण अर्थात साधन। स्वयंसेवक के रूप में हम ही कर्त्ता है और हमारे पास साधन के रूप में शरीर, मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार हैं जिनके माध्यम से कर्म घटित होता है। चौथा है विविध प्रकार की चेष्टाएं अर्थात प्रयत्न। हम प्रयत्नशील हैं इसीलिए यहां इस शिविर में आए हैं। पांचवा कारण है दैव अर्थात प्रारब्ध। पूर्व जन्मों में किए हुए कर्मों के फल से प्रारब्ध का निर्माण होता है, यह हमारे हाथ में नहीं है। प्रारब्ध यदि पक्ष में ना हो तो भी कर्म नहीं होता। हमारा जन्म भारत जैसे देश में हुआ है, क्षत्रिय कुल में हुआ है और हमें श्री क्षत्रिय युवक संघ में आने का अवसर भी प्राप्त हुआ है तो इसका अर्थ है कि हमारा प्रारब्ध भी हमारे अनुकूल हैं। इस प्रकार हमारे पास कर्म के लिए आवश्यक सभी पांच कारण उपस्थित हैं। हमें केवल यह दृढ़ निश्चय करना है कि यह काम हमें करना ही है।

22 मईः भगवान के अस्तित्व के बारे में दो मान्यताएं हैं, जो उस अस्तित्व को स्वीकार करते हैं उनको आस्तिक कहते हैं और जो स्वीकार नहीं करते उन्हें हम नास्तिक कहते हैं। आस्तिक लोग जो उपासना करते हैं इस संसार में, वह भी दो प्रकार की कहलाई जाती है - निर्गुण साधना और सगुण साधना। निर्गुण साधना का सामान्य अर्थ है बिना मूर्ति के, बिना कोई प्रतीक के हृदय में परमेश्वर का ध्यान करते हुए उपासना करना। जो ऐसा नहीं कर पाते वे प्रतीक का सहारा लेते हैं चाहे वह मूर्ति हो, चिह्न हो या कोई पुस्तक हो। हम भी श्री क्षत्रिय युवक संघ में दो प्रकार की साधना करते हैं, प्रथमतः हम प्रतीक पूजक हैं। हमारे ध्येय क्षात्रधर्म के लिए हमने केसरिया ध्वज को प्रतीक माना है जो यहां रात-दिन फहरा रहा है और देख रहा है कि हमारे जीवन में कहां अच्छे कदम उठ रहे हैं और कहां हमारी साधना भंग हो रही है। यह हमारे ईश्वर का प्रतीक भी है, क्षात्रधर्म का प्रतीक भी है, इसको सदैव स्मरण करते हुए स्वतः हमारा मस्तक झुक जाना चाहिए। दूसरी हम जो उपासना कर रहे हैं वह अंतःकरण की साधना है जो बाहर दिखाई नहीं देती। इस आंतरिक साधना में हम अपना स्वनिर्माण करने के लिए अपना अंतरावलोकन करते रहते हैं, यह स्वयं एक साधना है।

23 मईः गीता में वर्णित कर्म के पांच कारणों में जो पहला कारण है वह है 'अधिष्ठान'। श्री क्षत्रिय युवक संघ के लिए समाज ही अधिष्ठान हैं अर्थात समाज हमारा आधार, हमारा कार्यक्षेत्र है। जिस समाज में हम कार्य करना चाहते हैं उसकी स्थिति क्या है उसे हमें जान लेना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति, पशु अथवा समाज मृत हो तो वह कुछ भी नहीं कर सकता, उस पर किए गए सभी उपाय व्यर्थ जाएंगे। लेकिन यदि कोई समाज जीवित है तो उसमें कार्य करने का अर्थ बनता है। हमारे समाज की दशा और दिशा क्या है, उसकी व्याख्या श्री क्षत्रिय युवक संघ द्वारा यहां शिविर में की जाती है। कुछ लोग कहते हैं कि इस समाज का कुछ नहीं हो सकता, वहीं कुछ लोग कहते हैं कि हम समाज का उत्थान कर रहे हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ इन दोनों प्रकार की बातों से सहमत नहीं है। पूज्य तनसिंह जी ने समाज को मां का स्थान दिया है और मां का उत्थान नहीं किया जाता अपितु सेवा की जाती है और वह सेवा भी उपकार भाव से नहीं बल्कि अपने दायित्व निर्वहन के भाव से की जाती है।

24 मईः एक बात जो मुख्य रूप से हमको समझने की आवश्यकता है वो यह है कि कोई भी संस्था अथवा कोई भी संगठन होता है तो उसका प्राण उसका अनुशासन है। अनुशासन के अर्थ को यदि हम समझें तो अनु का अर्थ है पीछे और शासन का अर्थ है जिसका आदेश चलता है। सैन्य अनुशासन और हमारे अनुशासन में फर्क हैं। सैनिक अनुशासन में पहले आज्ञा मानों, फिर कोई प्रश्न हो तो कर सकते हैं। लेकिन हमारे अनुशासन में पहले अच्छी तरह समझ लें फिर उसका पालन करें। किसी भी संस्था की आयु इस बात पर निर्भर करती हैं कि उसमें पीछे चलने वाले अनुशासन कितना मानते हैं। सोच विचार कर आदेश का पालन करना सीखें, हमारे जीवन में आचरित करें। आज के बाहरी वातावरण में इतना वैचारिक और सांस्कृतिक प्रदूषण है कि हम उस में बह जाते हैं लेकिन ऐसे लोगों से संघ नहीं चलेगा। आप जहां कहीं जाते हैं वहां अन्यों जैसा आचरण नहीं करें बल्कि संसार के लोगों के लिए हमारा आचरण अनुकरणीय होना चाहिए।

25 मईः 'भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां बुद्धिजीविनः। बुद्धिमत्सु नराः श्रेष्ठा नरेषु क्षत्रियाः स्मृताः।।' यह मनुस्मृति का श्लोक है। जितने भी प्राणी हैं उनको आध्यात्मिक भाषा में भूत कहा जाता है और जो प्राणी नहीं है पर इस संसार में हैं और धीरे-धीरे विकास करते हैं, जैसे पहाड़, रजकण आदि, जो धीरे-धीरे अपना रूप बदलते हैं उन्हें भी भूत कहा जाता है। इनसे जो प्राणवान हैं उन्हें श्रेष्ठ कहा जाता है। प्राणवानों में फिर बुद्धिमान को और बुद्धिमानों में मनुष्य को श्रेष्ठ बताया गया है और मनुष्य में क्षत्रियों को श्रेष्ठ बताया है। सृष्टि के आदिकाल से ही विकास की यह परंपरा चल रही है। हम इस उच्च प्रशिक्षण शिविर में यह समझने के लिए आए हैं कि कोई श्रेष्ठ क्यों है? यह पत्थर, यह रजकण हमसे कुछ भी लेते नहीं हैं लेकिन देते बहुत कुछ हैं। यह जो भी लेते हैं प्रकृति से ही लेते हैं, हमसे नहीं। उनसे श्रेष्ठ यह पेड़-पौधे हैं जो हमसे कुछ ना लेकर हमें छाया, फल और ऑक्सीजन देते हैं। जो जितना देता है उतना ही श्रेष्ठ है। जो इसे समझता है हम उसे उत्तरदायी कहते हैं। शिविर में हम यह समझ लें कि कौम के प्रति, अपने गांव के प्रति, अध्यापकों, माता-पिता, समाज, राष्ट्र और इंसानियत के प्रति हमारा क्या दायित्व है और यह चिंतन करें कि क्या हम इसे पूरा कर रहे हैं?

26 मईः भारतीय मनीषियों ने सबसे पहले जो खोज की, अपने ज्ञान, ध्यान और तपस्या से उनके जो अनुभव में उतरा, उन्हें वेद कहते हैं। उन्हीं वेदों का सूक्ष्म रूप उपनिषद है। यूं तो अनेकों उपनिषद हैं पर उनमें मुख्य ग्यारह उपनिषद हैं। उनमें सबसे पहला और सबसे छोटा ईशोपनिषद है। उसकी प्रार्थना में बताया गया है कि यह भी सत्य है और वह भी सत्य है अर्थात जो दिखाई देता है, यह जो संसार है, सृष्टि है जिसे निस्सार बताया जाता है यह भी उपनिषद की दृष्टि में सत्य है। वह का अर्थ है परमपिता, परमेश्वर जो पूर्ण है और उसमें से पूर्ण को निकाल देने पर भी पूर्ण ही शेष बचता है। वह भी सत्य है। ईशोपनिषद में कुल 18 सूत्र हैं, सभी बहुत ही गंभीर हैं पर सबसे पहले श्लोक में उस बात को कहा है जो परम सत्य है - 'ईशा वास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्। तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्यस्विद्धनम्?॥' पूज्य तनसिंह जी ने अनेकों बौद्धिकों में इस श्लोक को महत्व दिया करते थे इसलिए हमारे लिए भी यह पूज्य है। इसका अर्थ है कि जो कुछ ईश्वर द्वारा आच्छादित है, ईश्वर में जो समाहित है, जिसमें ईश्वर समाहित है, संसार में जो कुछ भी है उसे अपना मत समझो। वह सब भगवान का है। इसके सदुपयोग का मना नहीं है पर इसमें ममत्व आरोपित नहीं करना है।

27 मईः श्री क्षत्रिय युवक संघ के जानकार और न जानने वाले, हमारे समाज के भी और इतर समाज के भी कुछ लोग संघ के बारे में यह कहते हैं कि ये तो इतिहास की बात करते हैं, इनके पास कोई योजना नहीं है, ये संस्कारों के निर्माण, चरित्र निर्माण और राष्ट्र को भावी नागरिक देने की बात करते हैं पर इनके पास है कुछ नहीं। अपनी अपनी सोच है। चरित्र इतिहास से और पूर्वकाल के संस्कारों से ही बनता है। शौर्य, वीरता, तेज जैसे गुण पीढ़ियों से जिस कौम के रक्त में चलते आए हैं उन्होंने ही इतिहास रचा। हमारे चरित्र पर कोई आक्षेप लगाता है तो हम को नहीं सुहाता है, हम विरोध भी करते हैं किंतु मेरी ऐसी मान्यता है कि चरित्र में कोई ना कोई कमी आई है। मध्यकाल, जिसे राजपूत काल भी कहा जाता है, में हम युद्ध कौशल में महाभारत से भी आगे निकल गए। शीश कटने के बाद भी लड़ना, जिस पति का मुख भी नहीं देखा उसके साथ सती होना, ऐसा पहले कभी इतिहास में नहीं हुआ। यह विशेषताएं तो बहुत बढ़ीं लेकिन दूसरी तरफ कमियां भी बहुत आई। हमारे युद्ध का उद्देश्य बहुत छोटा पड़ गया। हमसे अनेक बार चूक हुई। यह चरित्र की कमी ही कही जा सकती है। **(शेष पृष्ठ 6 पर)**

संपादकीय

मेरा महल हुआ मतवाला... कुटिया से लाया प्याला

महल प्रचूरता का प्रतीक है वहीं कुटिया अभाव का प्रतीक है। हर कुटिया महल में परिवर्तित होना चाहती है और यही विकास की स्वाभाविक प्रक्रिया है। लेकिन यदि महल कुटिया पर मतवाला होने लगे तो निश्चित रूप से वह अवनति को प्राप्त होता है और यही उसके लिए विडंबना होती है। पूज्य तनसिंह जी ने 1952 में एक गीत लिखा जिसमें ऐसी ही स्थिति का वर्णन किया है। उन्होंने लिखा-

'डाह भरी कुटिया पर मेरा महल हुआ मतवाला है,
अपना सब कुछ बेच तभी कुटिया से लाया प्याला है।

उन्होंने हमारे समाज, हमारी संस्कृति, हमारी परंपराओं और हमारी भारतीयता को महल की संज्ञा दी जो त्याग, बलिदान, उत्सर्ग और दायित्व बोध के मजबूत आधार पर खड़ा था और इसीलिए संपूर्ण सृष्टि का भी आधार बना हुआ था। लेकिन ईर्ष्या से प्रेरित ओछी मानसिकता की ओर वह आकर्षित हुआ और उस आकर्षण के परिणाम स्वरूप वह उस मानसिकता का अनुगामी बनने लगा। यही अनुगमन हमारी उच्च स्थिति को चलायमान करने में सफल हुई और परिणाम आज हमारी स्थिति के रूप में हमारे सामने है।

हमारी संस्कृति, हमारी भारतीयता पूर्णता की और प्रवाहित प्रक्रिया है। हमारी इस संस्कृति को सनातन संस्कृति कहा जाता है जिसका अर्थ यह होता है कि इसका प्रारंभ कब हुआ इसका कोई पता नहीं है। यह किन्हीं ईसा मसीह के बाद अस्तित्व में नहीं आई, यह किन्हीं जरथ्रुस्ट के बाद अस्तित्व में नहीं आई या यह किन्हीं मुहम्मद साहब के बाद अस्तित्व में नहीं आई बल्कि इसमें ऐसे महापुरुषों की एक अटूट श्रृंखला रही है और इस श्रृंखला ने ही इसे पूर्णता की ओर प्रवाहित रखा है। लेकिन कालांतर में हम ईर्ष्या प्रेरित विचारधाराओं के संपर्क में आते गये या हमारे भीतर मत्सर रूपी अवगुण ने अपना स्थान बनाना प्रारंभ किया और परिणाम स्वरूप हमारा महल कुटियाओं की ओर आकर्षित हुआ। इस आकर्षण ने हमें पूर्णता से अपूर्णता की ओर अग्रसर किया। संघ के द्वितीय संघप्रमुख पूज्य आयुवान सिंह जी ने अपनी पुस्तक 'मेरी साधना' में लिखा है कि 'प्रतिक्षण नवीनता की खोज में मैं पूर्णता से अपूर्णता की ओर खिंचता ही चला गया।' यही स्थिति हमारी हुई और हमारा महल कुटिया पर आसक्त हो गया। इस आसक्ति का स्तर इतना निम्न हो गया कि हम अपनी समस्त विशेषताओं की कीमत पर भी उस कुटिया से मिलने वाले प्याले को पीने को तत्पर हो गये और हमने ऐसा किया भी। उस प्याले के नशे में हम ऐसे मस्ताने बन गये कि हमने हमारे सर्वनाश को भी आमंत्रित कर लिया इसीलिए पूज्य तनसिंह जी सावधान करते हुए इसी सहगायन की अगली पंक्ति में लिखते हैं-

'मैं चिल्लाता थे नशा यही मत पगले बन तुं मस्ताना,
मस्ती का घूंघट खोल जरा यह सर्वनाश का है बाना।'

इस समाज का यह दुर्भाग्य रहा कि हमने इस सर्वनाश के बाने को न्यूनाधिक रूप से अंगीकार किया और संसार को मार्ग दिखाने वाली कौम स्वयं पथभ्रमित हो गई। लेकिन प्रश्न यह है कि क्या हम आज भी ऐसा नहीं कर रहे हैं? क्या हम आज भी हमारे इस महल की महत्ता समझ पा रहे हैं? क्या हमारा महल आज भी कुटियाओं की तरफ आसक्त नहीं है? यदि हमारे समाज के लोगों की स्थिति का गहराई से अध्ययन करेंगे तो पायेंगे कि हम आज भी हमारे महल की विशेषताओं की कीमत पर कुटिया की नेष्ठताओं को प्राप्त करने को तत्पर हैं और इसीलिए हमारी नजर हमारे पर नहीं बल्कि अन्यों पर है। हम अपने आपसे कुछ सीखना नहीं चाहते बल्कि अपनेपन को दरकिनार कर अन्यों का अनुसरण करना चाहते हैं। इसी गीत में पूज्य तनसिंह जी ने लिखा-

' हम अपनेपन को भूल गये कुछ संभव हो तो याद करें,
मोती बिखरे फिर भी अब तक पानी न गया कुछ ध्यान धरें।'

पाठक अपने आपसे पूछें कि क्या हम ऐसा कर पा रहे हैं? क्या हम आज भी अपनी श्रेष्ठ परंपराओं को अंगीकार करने को तत्पर हैं? कहीं हम भी रामायण और महाभारत को मायथोलॉजी तो नहीं कहने लगे हैं? कहीं हम तो जौहर और शाकों को आत्महंता कृत्य नहीं मानने लगे हैं? कहीं हम भी तो जमाने के साथ चलने के नाम पर मात्र प्रतिक्रिया को ही हमारे जीवन का आधार नहीं बना चुके हैं? कहीं हमारी समाज सेवा का क्षेत्र किसी राजनेता, किसी फिल्मकार या किसी समाज के कुछ उद्दण्डी लोगों की ध्यानाकर्षण के लिए की गई उद्दंडता के विरोध तक ही सीमित नहीं हो गयी है? कहीं हम भी येन केन प्रकारेण सफलता को ही सब कुछ मानने नहीं लग गये हैं? यह सब हमारे अपने जांचने के विषय हैं, अपने आपको परखने के विषय हैं। हमारे लिए अपने आपको परखने का विषय यह भी है कि हम किधर बढ़ना चाहते हैं, प्रायः हमारे समाज के तथाकथित समझदार लोग कहते मिल जायेंगे कि त्याग और बलिदान की बात आज के जमाने में अप्रासंगिक हो गई है। सृष्टि के प्रति उत्तरदायित्व बोध की बात कोरी भावुकता है, हमने कोई संपूर्ण समाज का ठेका नहीं ले रखा है, नैतिकता की बातें और धर्म की बातें केवल किताबों में लिखने के लिए होती हैं, हमें तो आज के जमाने में वही सब करना चाहिए जो अन्य लोग कर रहे हैं, हमारे विरोधी कर रहे हैं तो जरा विचार करें कि क्या यह अपना सब कुछ बेच कर कुटिया से प्याला लाने जैसा नहीं है? आज देश के भाग्यविधाता बने लोग प्रायः हमारे मध्यकालीन इतिहास पर प्रश्न चिह्न लगाते हुए कहते हैं कि हमने उस समय के आक्रांताओं ने जो तरीके अपनाए वे नहीं अपनाए लेकिन उनसे कोई पूछे कि यदि हम उन आक्रांताओं जैसे ही हो जाते तो क्या वे लोग इस प्रकार के प्रश्न उठाने के लायक भी रहते? उनके जैसे होने का अर्थ केवल अपने लिए जीना होता है, केवल स्वयं के स्वार्थ को ही प्रधानता देना होता है और यदि हम ऐसा करते तो क्या भारत की भारतीयता बच पाती? क्या हम यह कहने जैसे रहते कि मिश्र, युनान, रोम, ईरान आदि का मूल स्वरूप मिट गया लेकिन हमारी हस्ती बरकरार रही, भारतीयता का संसार से नामों निशान नहीं मिट पाया, उसका अस्तित्व केवल कुछ निर्जीव पत्थरों के खंडहरों जैसा नहीं रहा बल्कि आज भी एक जीवंत संस्कृति के रूप में बचा हुआ है। यही बात वर्तमान में हमारे समाज के तथाकथित समझदारों पर लागु होती है कि समझदारी कुटियाओं का अंधानुकरण करने में नहीं है बल्कि अपने महल की विशेषताओं को बरकरार रखने में है, उनका निरंतर सींचन करने में हैं, उनका अभ्यास करने में हैं, युगानुकूल प्रणाली द्वारा उनको अंगीकार करने में है। श्री क्षत्रिय युवक संघ इसी अभ्यास का नाम है जो जमाने के प्रभाव के कारण पैदा हुई हमारी कुटियाओं में रुचि का परिशोधन करता है और हमारी उन विशेषताओं को जागृत करने में संलग्न है जिनके कारण हमारे मोतियों की आब बरकरार रह सके। इसीलिए पूज्य तनसिंह जी ने लिखा कि मैं कंकरों में मिले हुए मोतियों को खोज रहा हूं, मैं मणिहारा बन बिखरे मोती पिरो रहा हूं और इसी प्रक्रिया से हमारा महल महल बना रहने में सक्षम रह पाएगा अन्यथा तो कुटियाओं की आकर्षित होकर वहां के प्याले पीने में कोई पुरुषार्थ की बात नहीं है, हम यदि अपने आपको जमाने के प्रवाह में बेसहारा छोड़ देंगे तो वह बहाव ही हमें कुटियाओं की ओर बिना हमारे प्रयास के ले जाएगा और जिनको बिना पुरुषार्थ के ही इस शरीर के जन्म और मृत्यु के बीच के समय को व्यतीत मात्र करना है उनके लिए यह मार्ग समीचीन हो सकता है लेकिन जिसमें थोड़ा भी अपने महल (क्षत्रियत्व/ राजपूती) का अहसास है वह तो पुरुषार्थ का मार्ग ही अंगीकार करेगा और ऐसे पुरुषार्थ प्रेमियों का स्वागत करने को श्री क्षत्रिय युवक संघ सदैव तत्पर रहता है।

फोगेरा में प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में धर्मसभा का आयोजन

बाड़मेर के फोगेरा में जगदम्बा माता, श्री राम दरबार और भगवान श्री कृष्ण मन्दिर के तीन दिवसीय प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव के अंतर्गत 8 मई को धर्मसभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए श्री क्षत्रिय युवक संघ के संरक्षक माननीय श्री भगवान सिंह रोलसाहबसर ने कहा कि आज युवाओं के शिक्षण पर विशेष ध्यान देने की जरूरत है। हमारी सभ्यता, संस्कृति और परंपराओं से उन्हें परिचित कराना आवश्यक है लेकिन वर्तमान शिक्षण पद्धति में ऐसा नहीं हो पा रहा है। समाज के प्रबुद्ध वर्ग को इस आवश्यकता को पूरा करने

के लिए प्रयत्न करने पड़ेंगे। हम मंदिर में पत्थर की मूर्ति लगाकर उसमें प्राण प्रतिष्ठा का आयोजन करते हैं लेकिन ईश्वर ने स्वयं हमें बनाकर हमारे भीतर अपनी प्राण प्रतिष्ठा की है। अपने हृदय में विराजमान उस ईश्वर को पहचानने के लिए साधना की, तप की आवश्यकता होती है। ऐसी साधना का अभ्यास जब तक हम नहीं करेंगे तब तक समाज और राष्ट्र में धर्म की स्थापना नहीं हो सकेगी। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने कहा कि यहां आए लोगों का आध्यात्मिक और धार्मिक भाव स्तुत्य है। अपने धर्म और संस्कृति के प्रति जिस समाज में ऐसा सम्मान हो वह समाज कभी भी भटक नहीं सकता। केंद्रीय कृषि राज्य मंत्री कैलाश चौधरी, रावत त्रिभुवन सिंह, सुनीता भाटी, गुमान सिंह सोढा, बाल सिंह राठौड़, भागीरथ चौधरी, दलाराम चौधरी और जगरामपुरी महाराज ने भी कार्यक्रम को संबोधित किया। सरपंच प्रतिनिधि समंदर सिंह फोगेरा ने ग्राम वासियों के साथ मिलकर व्यवस्था का जिम्मा संभाला। कार्यक्रम के दौरान माननीय संरक्षक श्री की ओर से उपस्थित बंधुओं को अड़गड़ानंद जी महाराज कृत 'यथार्थ गीता' पुस्तक का वितरण किया गया।

'युवकों एवं युवतियों के उच्च प्रशिक्षण शिविर संपन्न'

'मेरी साधना' के क्रमिक सोपानों का विश्लेषण

उच्च प्रशिक्षण शिविर में समास्या के सत्र के अंतर्गत श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील की पुस्तक 'मेरी साधना' के पठन व चर्चा के माध्यम से संघ साधना के क्रमिक सोपानों की जानकारी प्रदान की गई। पुस्तक में वर्णित साधना मार्ग के संबंध में हुई चर्चा में बताया गया कि साधक के मन में सर्वप्रथम कर्म करने की आकांक्षा उत्पन्न होती हैं लेकिन अनुभव और परीक्षण के अभाव में उसे सही मार्ग नहीं मिलता। फिर भी अंतर्चेतना से प्रेरित साधक मार्ग ढूंढने का प्रयास करता है। इस प्रयत्न में उसे अनेक मार्ग दिखाई देते हैं किंतु गहराई से देखने पर उनमें प्रकाश के आवरण में छुपा हुआ अंधकार दिखाई देता है। ऐसी स्थिति में साधक पराजित मना होकर कर्म त्याग की ओर उन्मुख होता है। किंतु यदि साधक के भीतर का सत्व प्रबल है तो उसे साध्य ज्ञान का संदेश स्वयं परमेश्वर द्वारा उसके अन्तर में प्रेषित होता है। परन्तु इस भागवत संदेश के अनुरूप चलना साधक के लिए सहज नहीं होता क्योंकि उसकी व्यभिचारिणी बुद्धि उसे भटकाने का कार्य करती है। जब साधक श्रद्धा और विश्वास के जल से उस भागवत संदेश के अंकुर को सींचता है तब तर्क श्रद्धा और विश्वास का सहगामी बनता है और साधक के लिए कर्तव्य ज्ञान स्पष्ट होता है। कर्तव्य का अर्थ है स्वधर्म पालन। हमारे गुण और स्वभाव के अनुकूल होने के कारण स्वधर्म ही हमारे लिए व्यावहारिक और कल्याणकारी है। क्षत्रिय कुल में जन्म लेने के कारण क्षात्र धर्म ही हमारा स्वधर्म, समाज धर्म और स्वाभाविक कर्तव्य है। जब साधक अपने समाज की स्थिति का अवलोकन करता है तो पाता है कि समाज जर्जर और रूग्ण अवस्था में पहुंच चुका है। समाज की इस दुर्दशा के कारण की खोज करने पर साधक के सामने स्पष्ट होता है कि समाज ने अपनी उपयोगिता खो दी हैं जो स्वधर्म की ही पर्यायवाची है। साधक की साधना परिस्थिति निरपेक्ष होते हुए भी समाज सापेक्ष है इसलिए समाज को उसकी दुर्दशा से निकालना साधक के लिए अनिवार्य है। समाज अपने खोए हुए गौरव को स्वधर्म अर्थात क्षात्रधर्म के पालन से ही पुनः प्राप्त कर सकता है। अपने पूर्वजों की संघर्ष की चिर परंपरा से साधक प्रेरणा प्राप्त करता है और शक्ति संचय में जुटता है। साधक अपने शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में शक्ति का आह्वान करता है किंतु वह यह भी अनुभव करता है कि केवल उसके शक्ति संपन्न होने से लक्ष्य प्राप्ति नहीं होगी बल्कि समाज के प्रत्येक घटक को शक्तिशाली बनाकर सामूहिक शक्ति का निर्माण करना होगा। इसके लिए जीवन व्यापी और जीवन पर्यंत साधना करनी पड़ेगी। वह सांघिक साधना के मार्ग में आगे कदम बढ़ाता है तब साधक के सामने अहंकार, स्वार्थ, कायरता, कृपणता जैसे भीतरी शत्रु खड़े होते हैं। इन सूत्रों को पराजित करने का उपाय संस्कार निर्माण है जिसके लिए वातावरण की अनुकूलता और पवित्रता आवश्यक है। मार्ग में साधक को अनेक कठिन परीक्षाओं का सामना करना पड़ता है किंतु दृढ़ संकल्प के सहारे साधक आगे बढ़ता रहता है। अपने ध्येय पर दृष्टि रखने वाला साधक संसार के इतर प्रलोभनों में नहीं फंसता। परिजनों का स्नेह भी ऐसे साधक को कर्तव्य पथ से विचलित नहीं कर सकता। अपने त्याग और बलिदान से वह राष्ट्र यज्ञ की क्षीण ज्वाला में पुनः प्राण भरता है। उसका लक्ष्य ही उसका मित्र हैं इसलिए अपनों का विरोध भी उसे डिगा नहीं सकता। अंतमुर्खी साधना से अखंड शक्ति के निर्माण में जुटा हुआ साधक निराशा, शिथिलता, उत्साह, आलस्य, प्रमाद, भय और विकलता से विचलित ना होकर ऊर्ध्वगामी साधना में रत रहता है। मार्ग की बाधाओं को अपने प्रयत्न और पुरुषार्थ से दूर करता हुआ साधक संघ शरीर का एक मजबूत घटक बनता है। नवधा भक्ति द्वारा साधक ईश्वरीय शक्ति का अहान करता है और आध्यात्मिक शक्ति का भी संचय करता है। इस प्रकार निरंतर शक्ति निर्माण के द्वारा साधक अपनी साधना के दीप को निरंतर प्रज्वलित रखता है और समाज में अंधकार को दूर करके प्रकाश फैलाता है। ऐसा साधक जब अपनी साधना से जीवन का एक भी दिन, शक्ति का एक भी अणु, द्रव्य का एक भी पैसा और हृदय का एक भी पवित्र भाव छिपा कर नहीं रखता तब वह अपने जैसे अनेकों साधकों के जीवन में भी साधना का दीप जलाने में सक्षम बनता है। बालिका शिविर में भी इस प्रकार इस पुस्तक पर चर्चा की गई।

डॉ कमल सिंह राठौड़ नेशनल एजुकेशन ब्रिलियंस अवार्ड 2022 से सम्मानित

भूपाल नॉबल्स विश्वविद्यालय के जनसंपर्क अधिकारी और बीएन कॉलेज ऑफ फामेर्सी उदयपुर के सहायक प्राध्यापक डॉ कमल सिंह राठौड़ को नई दिल्ली में नेशनल एजुकेशन ब्रिलियंस अवार्ड 2022 से सम्मानित गया। वेलकम होटल आईटीसी द्वारका सेक्टर 10, नई दिल्ली में आयोजित समारोह में डॉ कमल सिंह सहित सम्पूर्ण भारत से करीब 90 लोगों को यह पुरुस्कार दिया गया।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha, Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

Mobile : 95497-77775, 87428-13538, 98288-34449
जय श्री
बॉयज हॉस्टल
BEST FOR | 8th, 9th, 10th, 11th, 12th, Science Blo, Maths, IIT, NEET, JEE, Foundation, Target
CLC के पास, पिपराली रोड, सीकर
ALLEN के पीछे, शरदलता हॉस्पिटल के पास, पिपराली रोड, सीकर

अलख नयन
आई हॉस्पिटल
Super Specialized Eye Care Institute
विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा सेवाएं
मोतियाबिन्द | कॉर्निया | नेत्र प्रत्यारोपण
कालापानी | रेटिना | बच्चों के नेत्र रोग
डायबिटीक रेटिनोपैथी | ऑक्यूलोप्लास्टि
'अलख हिल्स', प्रताप नगर ऐक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर
0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

पूज्य तनसिंह जी के भावों की गहराई में लगाया गोता

सभी मनीषियों का यह अनुभव रहा है कि सत्य को भाषा में अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता। फिर भी भाषा के माध्यम से सत्य की अभिव्यक्ति का निकटतम और श्रेष्ठतम माध्यम काव्य को माना गया है। इसीलिए वेद, उपनिषद, गीता आदि सभी शास्त्रों की भाषा काव्यात्मक रही है। पूज्य तनसिंह जी ने भी अपने सहगीतों में संघदर्शन की गहनता को पिरोकर हमें गुढतम सत्य को सरल और रसात्मक स्वरूप में प्रदान किया है। उच्च प्रशिक्षण शिविर के दौरान अर्थबोध सत्र में पूज्य तनसिंह जी रचित इन सहगीतों का सरलार्थ और भावार्थ किया गया और स्वयंसेवकों ने पूज्य तनसिंह जी के भावों की गहराई में गोता लगाकर संघदर्शन के मोती निकालने का प्रयास किया। 19 मई को 'हिंदू के कुल के उजियारे' सहगीत पर चर्चा में बताया गया कि हिंदू कुल में प्रकाश फैलाने का काम क्षत्रिय ही कर सकता है लेकिन इसके लिए हमें अपने भाव-कर्म को एक बनाकर सामर्थ्यवान बनना पड़ेगा। 20 मई को 'देता रहे जीवन ज्योति' सहगीत पर चर्चा में बताया गया कि अपने अस्तित्व को पूरी तरह गलाए बिना संघ का आदर्श स्वयंसेवक नहीं बना जा सकता। 21 मई को 'दिया जले' सहगीत पर चर्चा में दीपक और परवाने के संबंध की व्याख्या के द्वारा त्याग और बलिदान की परंपरा को समझाया गया। 22 मई को 'भुलाए न भूले' सहगीत पर चर्चा में हमारे गौरवपूर्ण इतिहास और उसके संदर्भ में वर्तमान स्थिति व इस हेतु संघ द्वारा किए जा रहे प्रयासों को समझाया गया। 23 मई को 'हंसती है जग की होनी' पर चर्चा में चुनौतियों से पीछे न हटने की बात कही गई। 24 मई को 'हृदय की आग धधकाकर' सहगीत के भाव समझाते हुए कहा गया कि अपने ही हृदय की अग्नि को जलाकर उसी पर स्वाहा हो जाने वाले साधकों का जीवन ही सभी के लिए प्रेरणास्पद बन सकता है। 25 मई को 'चिता जल रही है' पर चर्चा में बताया गया कि कर्तव्य के मार्ग पर परिजनों के स्नेह, अपनों के विरोध सहित अनेकों बाधाएं आती हैं जिनसे साधक को पार पाना होता है और साधनामार्ग पर अपने अरमानों को जलाना पड़ता है। 26 मई को 'अरमानों की दुनिया' सहगीत पर चर्चा हुई जिसमें अपने लक्ष्य की ओर अनवरत बढ़ते रहने और मार्ग के विरोधों से अप्रभावित रहने की बात कही गई। 27 मई को 'कहो चुकाई कीमत किसने' सहगीत पर चर्चा के दौरान ऐतिहासिक घटनाओं के संदर्भ में हमारी कौम के गुणों को बताया गया। बालिका शिविर में भी प्रतिदिन एक सहगायन का अर्थबोध कर पूज्य तनसिंह जी के भाव सागर में गोते लगाए।

'धुएं में सत्य को ओझल न होने दें'

(एक से लगातार)

एक वृहद परिवार का सदस्य होने का अनुभव हमने यहां किया लेकिन यह प्रकृति का नियम है कि जो आता है वह वापस जाता है। जिस भाल पर तिलक लगाकर आपका स्वागत किया गया था, उसी भाल पर तिलक लगाकर आज आप को विदाई दी जा रही है। जब कोई प्रिय वस्तु छूटने वाली हो तो उदासी स्वतः ही आ जाती है। यही उदासी आपके चेहरे पर भी झलक रही है लेकिन आपको देखकर यह भी लगा कि जैसे हर व्यक्ति ने मन ही मन कोई ना कोई संकल्प लिया है। उसी संकल्प को लेकर हम संसार में जा रहे हैं। जिसके मन में संकल्प जग जाता है, जिसके हृदय में ज्योति जल जाती है, वह चाहे कैसे भी वातावरण में जाए वह वहां लड़ सकता है क्योंकि वह जागृत रहता है। हम जानते हैं कि बाहर संसार का वातावरण कितना दूषित है। हम कितने ही सजग हों फिर भी इसका असर हुए बिना रहता नहीं है। यहां जो प्रकाश, जो चेतना, जो उजाला हमने पाया है उसे लेकर हम जा रहे हैं लेकिन यदि बाहर धुआं फैला हो तो उस प्रकाश में भी दिखना बंद हो जाता है। दुर्गा सप्तशती में धूम्रकेतु का उदाहरण आता है। जिस संसार में हम जा रहे हैं वहां भी ऐसा ही धूम्रकेतु है जिसके धुएं में सत्य ओझल हो जाता है। यहां हमने एकता का, सामूहिक शक्ति का अनुभव किया है। जो भी बाधा आई उससे संघर्ष करने के लिए हम सब एक साथ थे लेकिन बाहर के संसार में उस अंधकार, उस धूम्रकेतु के सामने आप अपने आप को अकेला पाएंगे। उससे लड़ने के लिए आपको स्वयं को तैयार करना होगा। जिस बीज का यहां अंकुरण हुआ है उसे पोषित करना होगा, पल्लवित करना होगा। यहां से जाकर हम कहीं संघ को भूल नहीं जाए। बाहर की व्यस्तता में भूलने का खतरा रहता ही है लेकिन जो अपना है उसे हम भूलते नहीं है। श्री क्षत्रिय युवक संघ भी मेरा है अगर यह दायित्व बोध आ जाएगा तो हम संघ को नहीं भूलेंगे लेकिन इसे यदि जीवन के अन्य कार्यों के समानांतर कार्य मान लिया तो निश्चय ही भूल जाएंगे। स्वामी रामतीर्थ के जीवन में एक प्रसंग आता है कि वे एक बार कहीं जा रहे थे तो एक बालिका को देखा जिसने दोनों हाथों में सामान पकड़ रखा था और एक छोटे बच्चे को अपने कंधे पर बिठाकर कहीं जा रही थी। उसे कष्ट में देखकर स्वामी रामतीर्थ उसके पास गए और कहा कि इस बच्चे का बोझ तुमसे उठाया नहीं जा रहा होगा, इसे मुझे दे दो। तब उस बालिका ने उत्तर दिया कि यह आपके लिए बोझ होगा, मेरा तो यह भाई है। इसी प्रकार संघ को यदि आपने अपना माना है तो आपको जीवन भर संघ याद रहेगा। इस यज्ञ की त्यागस्वरूपा भस्म का तिलक अपने भाल पर करके जाएं और श्री क्षत्रिय युवक संघ को अपना मानने के संकल्प को दृढ़ करें। कोई भी संकल्प दृढ़ तभी होता है जब उसे बार-बार याद किया जाए। आप संघ को स्मरण रखें और जब भी अवसर मिले पुनः शाखा और शिविर के माध्यम से ऐसे वातावरण में आने का प्रयास करें। ईश्वर आप का संकल्प दृढ़तर करें इसी प्रार्थना के साथ माननीय भगवान सिंह रोलसाहबसर की ओर से मैं आपको इस शिविर से विदाई देता हूं।

समाज और राष्ट्र... उस सुगंध को अपने परिवार में, अपने गांव में, अपने समाज में इस तरह से फैलाना कि आपको देखकर सभी को संघ दिखाई दे।

27 मई को बालिकाओं के लिए भ्रमण का कार्यक्रम भी रखा गया, जिसमें प्रातः 6:45 बजे तीन बसों में भरकर बालिकाएं वैर का थान पहुंची। यहां तलहटी में स्थित मंदिर तथा उसके पश्चात पहाड़ी की चोटी पर स्थित मंदिर के दर्शन किए। यहां जिन गुफाओं में रहकर पूज्य तनसिंह जी ने तपस्या की थी उनके भी दर्शन किए। यहां से बालिकाएं केलनोर गांव पहुंची तथा भारत-पाकिस्तान सीमा पर स्थित बीएसएफ की चौकी पर पहुंचकर वहां उपस्थित अधिकारियों के निर्देशन में भारत-पाकिस्तान सीमा को देखा। केलनोर स्थित राजकीय विद्यालय में भोजन के पश्चात बालिकाएं पुनः विरात्रा के लिए रवाना हुई।

प्रभात संदेशों... दूसरी बात है संस्कार की, जिसकी परिभाषा और इतिहास बहुत कम लोग जानते हैं। हमारे यहां 16 संस्कार की पद्धति रही है। बच्चे के गर्भ में आने से पहले ही संस्कार की प्रक्रिया प्रारंभ हो जाती है। मातृपक्ष और पितृपक्ष का व्यवहार कैसा रहा है, उनका इतिहास, चरित्र कैसा रहा है वही संतान के अंदर संस्कार बनकर आते हैं। मिलन के समय माता-पिता के जो भाव है उनका भी संतान के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। जरा सी सावधानी हटी तो दुर्घटना घट सकती है। यहां इस शिविर में सघन प्रयास किया जा रहा है कि प्रतिक्षण सावधानी रखी जाय। लेकिन अभी बहुत कुछ करना शेष है। जन्मों लग सकते हैं हमें संस्कारित होने में, इसलिए परमेश्वर से सदैव धैर्य की प्रार्थना करते रहें।

28 मईः ईशोपनिषद में कहा गया है कि ईश्वर ने हमें इस धरती पर भेजा है, यह जीवन दिया है तो हम 100 वर्ष तक भगवान द्वारा नियत कर्म, करणीय कर्म को करते हुए जीने की कामना करें। संघ का काम तभी हो सकेगा जब हम जीवित रहकर लोगों को प्रेरणा देते रहें, अतः यह कामना भी बुरी नहीं है। करणीय कर्म, जो भगवान द्वारा नियत है, वह हमको बांधता नहीं है ईश्वर की ओर ले जाता है। संघ की आज्ञा है कि आपको संघ का काम करना ही है, लस्टम-पस्टम गति से नहीं, त्वरित गति से तत्परता के साथ करना है और जो भी हम करें वह मन-बुद्धि से स्वीकृत हो। हमारा अहंकार कहीं इसमें आड़े ना आ जाए। इसके लिए परमेश्वर से प्रार्थना करते रहें।

29 मईः प्राचीन कालीन गुरुकुल व्यवस्था में विद्याध्ययन पूर्ण होने पर जब गृहस्थ आश्रम में प्रवेश करने के लिए भेजा जाता था तब उपदेश दिया जाता था कि यहां जो बताया, सिखाया गया है उसका पालन करना, नहीं तो भटक जाओगे। यहां, श्री क्षत्रिय युवक संघ के इस शिविर में भी आपने जो सीखा है, उसे स्मरण रखना आपका काम है। संघ कहता है - जागते रहो, सावधान रहो। जो बीज यहां पड़ा है वह अंकुरित होगा, पल्लवित होगा लेकिन जैसे छोटे पौधे के अनेक शत्रु होते हैं वैसे ही इसके भी है। इसकी रक्षा आपको ही करनी है। संघ का स्मरण रखेंगे तो सब भय दूर हो जाएंगे। जो ज्ञान हमने यहां प्राप्त किया है वह ईश्वरीय ज्ञान है और ईश्वर ही हमारी रक्षा करेगा, आप घबराना मत, विपरीत परिस्थितियों में शस्त्र मत डालना।

खेलों में सीखा अनुशासन, भ्रातृत्व और संघर्षशीलता का पाठ

खेल श्री क्षत्रिय युवक संघ के दर्शन की व्यावहारिक प्रयोगशाला है, जहां न्यूनतम साधनों से खेले जा सकने वाले साधारण खेलों में महान सिद्धांतों को जीवन में ढालने का अभ्यास हो जाता है। उच्च प्रशिक्षण शिविर में शिविरार्थियों को 12 पथकों में बांटकर प्रतिदिन तीन सत्रों में खेल खिलाए गए। प्रातः 5:40 से 7:20 बजे तक होने वाले प्रातःकालीन खेलों में संघर्षप्रधान खेल खेले गए जिनमें अपनी समस्त ऊर्जा को संघर्ष में लगा देने और फिर नई ऊर्जा के साथ नए संघर्ष में जुटने का अभ्यास कराया गया। दोपहर के विश्राम के पश्चात बुद्धि प्रधान खेलों के माध्यम से सजगता और मानसिक रूप से दृढ़ रहने का अभ्यास किया गया। सायंकालीन खेल सत्र में चुस्ती-फुर्ती और दौड़ वाले खेल खेले गए। खेलों के बाद होने वाली चचाओं में पथक शिक्षकों द्वारा इन खेलों के पीछे छिपी शिक्षा से शिविरार्थियों को परिचित कराया गया। बालिका शिविर में पथक बनाकर खेलों के माध्यम से संघ दर्शन का व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया।

'शिक्षक की समस्याएं' पुस्तक पर चर्चा

\शिविर में वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीर सिंह जी सरवड़ी द्वारा शिक्षक श्रेणी के स्वयंसेवकों के साथ पूज्य श्री तन सिंह जी रचित पुस्तक 'शिक्षक की समस्याएं'के विभिन्न प्रकरणों पर चर्चा की। उन्होंने बताया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का शिक्षण जीवनव्यापी और जीवन पर्यंत है इसलिए इसके शिक्षक की समस्याएं भी अत्यंत व्यापक और बहुआयामी है। अपनी वर्तमान स्थिति से पीड़ित किसी समाज में सर्वप्रथम कर्म निष्ठा का जन्म होता है, यह निष्ठा लोकमानस की भाव तरंग बनकर पर्याप्त शक्ति मिलने पर वर्तमान व्यवस्था को परिवर्तित कर के नए भविष्य के निर्माण की ओर बढ़ती है। लेकिन यह तरंग संस्कारहीनता के हाथों पड़कर विध्वंस का मार्ग भी खोल सकती है इस दृष्टि से शिक्षक को इस भाव तरंग के निर्माण के साथ ही इस को शक्तिशाली बनाने और इसे अनवरत सही मार्ग पर बनाए रखने का कार्य भी करना पड़ता है। इस मार्ग में अनेक प्रकार की बाधाएं आती हैं जिनका समाधान पूज्य तनसिंह जी ने इस पुस्तक में बताया है।

'पूर्व धारणाएं' प्रकरण पर चर्चा करते हुए बताया गया कि यदि शिक्षक पूर्व धारणाओं से ग्रसित है तो वह शिक्षण का उत्तरदायित्व ठीक प्रकार से नहीं निभा सकता। ज्ञान जब गति खो देता है तो वह पूर्व धारणा में बदल जाता है। ऐसे में प्रारंभिक विकास को ही अंतिम उपलब्धि मान लिया जाता है और साधना ज्ञान भ्रष्ट हो जाती है। इस समस्या से मुक्त होने के लिए आवश्यक हैं कि शिक्षक अपने आप को ज्ञान के प्रति नमनशील बनाए। शिक्षक को यह भी चाहिए कि वह प्रत्येक साधक को अपनी नवीन छवि गढ़ने और उसे रूपांतरित करने की छूट दे। 'व्यापक आवश्यकताएं' प्रकरण पर चर्चा में बताया गया कि भारत में संगठन की आवश्यकता केवल आर्थिक, राजनीतिक अथवा धार्मिक स्वरूप में ही नहीं है बल्कि भारतीय परंपरा में व्यक्ति और समाज की संपूर्ण आवश्यकताओं की पूर्ति का माध्यम संगठन को माना गया है। इस दृष्टिकोण से हमारे शिक्षक को भी साधक और समाज की व्यापक आवश्यकताओं के बारे में ज्ञान होना चाहिए और उसे शिक्षण के साथ-साथ यथाशक्ति उन आवश्यकताओं की पूर्ति करने का प्रयत्न भी करना चाहिए। 'विनिमय दोष' नामक प्रकरण पर चर्चा करते हुए बताया गया कि जब शिक्षक की आत्मीयता का स्तर घट जाए अथवा शिक्षण में प्रयुक्त प्रेरक तत्वों के मूल्य साधक की नजरों में गिर जाए तो शिक्षा का मूल विनिमय अपवित्र हो जाता है। ऐसी अवस्था में शिक्षण सफल नहीं हो सकता। विनिमय दोष की समस्या को दूर करने के लिए शिक्षक को मूल्य शुद्धि, आत्मशुद्धि और अंतर्संघर्ष की प्रक्रिया का सहारा लेना पड़ता है। अगले प्रकरण 'कोलाहल' पर चर्चा में बताया गया कि अपने भीतर नीरवता लाए बिना शिक्षक शिक्षार्थी के भीतरी कोलाहल को शांत नहीं कर सकता। शिक्षक के लिए शिक्षण का मुख्य साधन शब्द नहीं बल्कि आचरण है जिससे वह शिक्षार्थी के जीवन में गहरा उतरता है। 'पात्र की परख' प्रकरण पर चर्चा में बताया गया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का कार्य वास्तव में परमेश्वर का कार्य है इसलिए इसमें असफलता का भय शिक्षक को कभी नहीं रखना चाहिए, साथ ही यह भी याद रखना चाहिए कि सभी को एक साथ सारी बातें समझाने का प्रयास करना संतुलित दृष्टिकोण नहीं है। शिक्षक को लोकमत और लोकधारणाओं के आधार पर अपने सिद्धांतों को नहीं बदलना है बल्कि अपने सिद्धांतों पर दृढ़ रहते हुए उनके अनुकूल लोकमत का निर्माण करना है।

यशवर्धन सिंह को राज्य स्तरीय विज्ञान मेले में प्रथम स्थान

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण विभाग द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय सॉफ्टवेयर एवं एप्स का चार दिवसीय वर्चुअल विज्ञान मेला (2021-22) राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय पाली में आयोजित हुआ जिसमें के. बी. एम. पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल, पुनाली में कक्षा 8 के छात्र पॉतली निवासी यशवर्धन सिंह चुंडावत ने डूंगरपुर जिले की ओर से प्रतिनिधित्व करते हुए ब्लाइंडमेन स्टिक एवं इलेक्ट्रॉनिक माइंड कंसंट्रेट गेम पर अपने प्रस्तुतीकरण के लिए जूनियर वर्ग में राज्य स्तर पर प्रथम स्थान प्राप्त किया एवं राष्ट्रीय विज्ञान मेले के लिए चयनित हुए।

'युवक और युवतियों के उच्च प्रशिक्षण शिविर संपन्न'

बौद्धिक प्रवचनों में समझा संघदर्शन

उच्च प्रशिक्षण शिविर शिविरार्थी के लिए श्री क्षत्रिय युवक संघ के विचारदर्शन को समझने का श्रेष्ठतम अवसर होता है जहां बौद्धिक सत्र के दौरान सांघिक विचारधारा के विविध विषयों पर लगातार दस दिन तक व्याख्यान दिए जाते हैं। शिविरार्थियों को चार पथक में विभाजित करके अलग अलग स्थानों पर दिन में 3:30 से 5:40 बजे तक के सत्र में बौद्धिक प्रवचनों के माध्यम से संघ दर्शन को समझने और समझाने का प्रयास किया गया। 19 मई को 'हमारा उद्देश्य और मार्ग' विषय पर प्रवचन में बताया गया कि हमारा जन्म कोई आकस्मिक घटना न होकर शाश्वत श्रृंखला की एक कड़ी है। हमने स्वयं अपनी मर्जी से जन्म लिया नहीं है अपितु हमें परमेश्वर के द्वारा एक निश्चित देश, कुल और परिवार में जन्म दिया गया है। जो वस्तु जिस उद्देश्य के लिए बनी है उसी के निमित्त वह काम में आए तभी उसका सदुपयोग हैं अन्यथा उपयोगिता के अभाव में उसका अस्तित्व भी कालांतर में समाप्त हो जाएगा। मनुष्य जन्म की सार्थकता किसमें है यह राम, कृष्ण आदि हमारे महान पूर्वजों के जीवन आचरण से पता चलता है। हमारे पूर्वजों ने क्षात्रधर्म का पालन करते हुए अपना जीवन जिया है अतः हमारे जीवन का उद्देश्य भी क्षात्रधर्म पालन ही है। 20 मई को 'लोकसंग्रह' विषय पर प्रवचन हुआ जिसमें बताया गया कि श्री क्षत्रिय युवक संघ का मुख्य कार्य लोकसंग्रह का ही है। लोकसंग्रह में केवल भीड़ एकत्र करने की बात नहीं है बल्कि धारण, पोषण व नियमन की शक्तियों के प्रयोग द्वारा एक निश्चित उद्देश्य की प्राप्ति के लिए एक सशक्त संगठन खड़ा करना ही सच्चा लोकसंग्रह है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्मप्रणाली में इस प्रकार के लोकसंग्रह के लिए आवश्यक सभी तत्व विद्यमान है। लोकसंग्रह में लोकसंपर्क और लोक शिक्षण का कार्य सम्मिलित है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की शाखाएं, शिविर आदि कार्यक्रम इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए हैं। गीता में भी भगवान श्री कृष्ण ने श्रेष्ठ पुरुषों द्वारा लोक संग्रह के उद्देश्य से कर्म करते रहने की बात कही है। 21 मई को 'अधिकारी साधक' विषय पर प्रवचन में श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना के अधिकारी साधक की विशेषताओं के संबंध में बताया गया। साध्य और साधना के साथ ही साधक भी उतना ही महत्वपूर्ण है क्योंकि बिना साधक के साध्य और साधना निरर्थक हो जाएंगे। सभी में सभी प्रकार की योग्यता नहीं होती अतः जिसके लिए जो मार्ग अनुकूल है वही उसके लिए उचित है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के साधक की तीन कोटिया हैं - सामान्य कोटि के साधक के लिए रक्त की पवित्रता, स्वेच्छा और उत्साह की विशेषताएं आवश्यक मानी गई हैं। उपरोक्त तीन गुणों वाला साधक संघ की साधना में निभ जाएगा लेकिन हमारी साधना की मांग इससे अधिक है इसलिए मध्यम कोटि के साधक के लिए इन तीन विशेषताओं के अतिरिक्त 'निर्दोष विनिमय' और 'द्वेष रहितता' की विशेषता भी आवश्यक मानी गई है। किंतु श्री क्षत्रिय युवक संघ के आदर्श तक पहुंचने से पहले रुकने की बात को स्वीकार नहीं करता इसलिए अपने प्रत्येक स्वयंसेवक से वह श्रेष्ठतम कोटि का साधक बनने की अपेक्षा रखता है और इसके लिए उपरोक्त पांच विशेषताओं के साथ में जिस छठी विशेषता की आवश्यकता है, वह है आकूतन की समानता अर्थात हम सबका आकूतन (मापदंड) समान हो जाए। 22 मई को बौद्धिक प्रवचन के दौरान हमारे ध्वज के स्वरूप और उसकी विशेषताओं के सम्बन्ध में बताया गया।

पूज्य केसरिया ध्वज क्षात्रधर्म, परंपरा और संस्कृति का अमर प्रतीक है। यह युगों से हमारे पूर्वजों के त्याग और बलिदान का साक्षी रहा है। केसरिया ध्वज हमारे ध्येय क्षात्रधर्म का मूर्तिमान स्वरूप है। इसके प्रति श्रद्धा रखना और इस के सम्मान में कोई कमी ना आने देना हमारे लिए मनोबल का स्रोत बनता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक के लिए केसरिया ध्वज से बढ़कर ऐसा अन्य कोई जीवंत प्रतीक नहीं हो सकता। केसरिया ध्वज श्री क्षत्रिय युवक संघ का नेता है और संघप्रमुख उसी का प्रतिनिधित्व करते हैं। 23 मई को 'जीवित समाज के लक्षण' विषय पर बौद्धिक प्रवचन में बताया गया कि हमारे समाज ने प्रत्येक क्षेत्र में ऐसी सीमाएं बांधी जिन्हें कोई छू नहीं सका। स्वधर्म की मान्यता, सांस्कृतिक मान्यताएं, संवेदना, आत्मीयता, ज्ञान पिपासा, नवनिर्माण की भावना, मान बिंदुओं का आदर, महापुरुषों की परंपरा और प्रतिहिंसा की भावना आदि विशेषताओं के आधार पर समाज की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करते हुए बताया गया कि हमारा समाज जीवित तो है किंतु रूग्ण स्थिति में है जिसे समुचित उपचार और सेवा की आवश्यकता है। 24 मई को अनुशासन विषय पर प्रवचन में बताया गया कि अनुशासन का अर्थ अंतिम उपदेश होता है। सभी उपदेशों का सार होता है। शासन के पीछे चलना। अनुशासित संगठन से ही शक्ति का निर्माण संभव है। श्री क्षत्रिय युवक संघ के स्वयंसेवक के लिए अनुशासन एक अनिवार्य आवश्यकता है लेकिन यह अनुशासन अंधानुकरण मात्र नहीं है बल्कि शुद्ध विवेक द्वारा उचित-अनुचित का निर्णय करके कर्म के पीछे के मर्म को समझते हुए आज्ञा पालन करने से विकसित होता है। ऐसे अनुशासन से बद्ध संगठन में स्थायित्व आता है किंतु जड़ता नहीं आती। संघ का अनुशासन भय का नहीं प्रेम का संबंध है। आत्मानुशासन ही अनुशासन का श्रेष्ठतम स्वरूप है। 25 मई को 'उत्तरदायित्व' का अर्थ समझाते हुए बताया गया कि हम पर माता-पिता, समाज, गुरुजनों आदि का ऋण है जिसे चुकाना हमारा उत्तरदायित्व है। कृतज्ञता के भाव से उत्तरदायित्व निर्वहन की प्रेरणा मिलती है। कृतज्ञ होने की क्षमता मनुष्य की श्रेष्ठता का मापदण्ड है। हमारे जीवन में हमें अनेक व्यक्तियों का विभिन्न प्रकार से सहयोग मिलता है जिनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करना हमारा कर्तव्य है। कृतज्ञता प्रकट करने का उचित मार्ग है समाज के प्रति अपने उत्तरदायित्व का निष्ठा पूर्वक निर्वहन करना। श्री क्षत्रिय युवक संघ में स्वयंसेवक के लिए उत्तरदायित्व ही महत्वपूर्ण है अधिकार नहीं। अपने उत्तरदायित्व के प्रति गहन तादात्म्य श्री क्षत्रिय युवक संघ की साधना का मूल तत्व है। 26 मई को हमारी संस्कृति के विषय में प्रवचन में बताया गया कि भारतवर्ष की संस्कृति विश्व में सर्वश्रेष्ठ रही है और इस संस्कृति के निर्माण में हमारे पूर्वजों का सर्वाधिक महत्वपूर्ण योगदान रहा है। हमारे पूर्वजों द्वारा त्याग और बलिदान से निर्मित इस संस्कृति के रक्षण और संवर्धन का दायित्व हमारा ही है। निकृष्ट विजातीय तत्वों के प्रवेश से संस्कृति दूषित हो जाती है। वर्तमान में भारतीय संस्कृति के साथ ऐसा ही हो रहा है। इस सांस्कृतिक क्षरण को रोकने के लिए जिस प्रकार के शिक्षण की आवश्यकता है, वह श्री क्षत्रिय युवक संघ की सामूहिक संस्कारमयी कर्म प्रणाली में निहित है। 27 मई को हमारे गौरवशाली इतिहास के बारे में शिविरार्थियों को बताया गया कि यदि संसार के इतिहास में से भारत के इतिहास को हटा दिया जाए तो पीछे बहुत कम बचता है और भारत का संपूर्ण इतिहास क्षत्रिय कौम द्वारा निर्मित हुआ है। हमारा गौरवपूर्ण इतिहास हमारे पूर्वजों के स्वधर्मपालन के निमित्त किए गए त्याग और बलिदान से निर्मित हुआ है। अनेकों ऐतिहासिक घटनाओं की जानकारी देकर बताया गया कि इतिहास हमारे लिए श्रेष्ठतम शिक्षक है। यह हमें केवल प्रेरणा ही प्रदान नहीं करता बल्कि हमें अपनी भूलों के प्रति भी सचेत करता है।

श्री क्षत्रिय युवक संघ इतिहास को इसी दृष्टिकोण से देखता है और उससे प्रेरणा लेकर एक उज्जवल भविष्य के निर्माण के लिए कार्य कर रहा है। 28 मई को 'नेतृत्व' विषय पर प्रवचन में बताया गया कि सच्चे नेतृत्व का जन्म सच्चे अनुचरत्व से ही हो सकता है। जो एक अच्छे सैनिक की योग्यता नहीं रखता, वह एक अच्छा सेनापति भी नहीं बन सकता। श्री क्षत्रिय युवक संघ के नेता संघप्रमुख हैं जो पूज्य केसरिया ध्वज के प्रतिनिधि के रूप में हमारा नेतृत्व करते हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ में नेतृत्व अधिकार का नहीं बल्कि दायित्व का प्रतीक है और संघप्रमुख हमारे सर्वोच्च सहयोगी हैं। श्री क्षत्रिय युवक संघ एकचालुकानुवर्तित्व के सिद्धांत पर कार्य करता है क्योंकि इसके बिना किसी भी संगठन में शक्ति का निर्माण नहीं हो सकता। श्री क्षत्रिय युवक संघ में अपने नेता की आज्ञा सर्वोपरि है। श्री क्षत्रिय युवक संघ की प्रणाली की यह विशेषता है कि यहां जो श्रेष्ठतम अनुचर है, वही श्रेष्ठतम नेता बन सकता है। बाहर से नेतृत्व लाने की यहां कोई परंपरा नहीं है। इसी प्रकार बालिका शिविर में भी बौद्धिकों द्वारा संघ दर्शन समझा गया।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org